आंध्रप्रदेश के कोण्डापल्ली काष्ठ खिलौनों का कलात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से चित्रकला में पी-

एच.डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ.नमिता त्यागी

असि.प्रोफेसर

ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग,कला संकाय

शोध छात्रा

पूनम बघेल

ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा (282005)

2022

विषय प्रवेश

•शोध संकल्पना 1-4

•सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन 4-5

• परिकल्पना 5

• उद्देश्य 5

• चर 5

• कार्य प्रणाली 6

• अनुसंधान अभिकल्प 6

• प्रदत्त संकलन 6

- प्राथमिक स्त्रोत 6

- द्वितीयक स्त्रोत 6

• प्रतिदर्श आकार 6

• सीमायें 6

• आधुनिक युग में प्रासंगिकता 6-7

• निष्कर्ष 7

शोधसंकल्पना:-

भारतीय कला की सामग्री वैसे ही समृदृ है जैसी भारतीय संस्कृति में साहित्य, धर्म और दर्शन आदि। भारतीय कला के वातायन द्वारा हम यहाँ के शिल्प, मूर्तियाँ, चित्र, वास्तु/स्थापत्य आदि का साक्षात् दर्शन प्राप्त कर सकते हैं और इनमें छुपी हुई मानसिक कल्पना प्रतिभा से भी परिचित हो सकते हैं। यहाँ पर कला सामग्री प्रभूत मात्रा में पायी गई है। भारतीय कला देश के प्रत्येक भू-भाग में कला धारा दिशा-दशाओं में बहती रही, देश के प्रत्येक भू-भाग में कला ने अपना अध्र्य अर्पित किया जिसके फलस्वरूप अनेक जातियों/वंशों में नये रूपों में जन्मी। भारतीय कला भारतवर्ष के विचार, धर्म, तत्वज्ञान और संस्कृति का दर्पण है। भारतीय जनजीवन की व्याख्या कला के माध्यम द्वारा ही हुई , अत्एव उसमें जनजीवन व लोककला का प्रतिबिम्ब पाया जाता है।

भारतीय कला हमें चित्र, मूर्ति, स्थात्पत्य, शिल्प आदि अनेक रूपों मे देखने को मिलती है, इसके साथ ही भारतीय कला शिल्प कला के अन्तर्गत खिलौनों के विपुल संसार को भी उद्घाटित करती है। खिलौने मनोविनोद/मनोरंजन हेतु तो प्रयुक्त होते ही है अपितु यह अपना कलात्मक पक्ष भी रखते हैं। खिलौने टेराकोटा, सेलखड़ी, हाथीदांत, पेपर मेसी, चीनी मिट्टी, कपड़ा, धातु, पत्थर तथा लकड़ी आदि विभिन्न माध्यमों में बने होते हैं।

खिलौनों का इतिहास अति प्राचीन है। सबसे प्रचीन मिले खिलौने लगभग 2500 ई॰पू॰ सिन्धु सभ्यता में पाये गये। भारतीय कला में खिलौनों व मृण्मय मूर्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है। सिन्धु सभ्यता से लेकर आघवधि तक पार्थिव मूर्तियों का प्रचलन रहा है। यहाँ के निवासी काष्ठ कला में भी निपुण थे। लकड़ी का चाक, बैलगाड़ी के पहिए, लकड़ी के पाइप तथा हथियार-भाले और कुल्हाड़ी आदि बनाने में लकड़ी का प्रयोग किया गया। कालीबंगा से लकड़ी के पाइप, बनमाली से हल की आकृति का खिलौना, बैलगाड़ी (मिट्टी का खिलौना), चहुन्दडों से कॉसे की बैलगाड़ी, लोथल से पकी मिट्टी की नाव, अलीमुराद (पाकिस्तान) से बैल की छोटी मृण्मूर्ति तथा अन्य खिलौने, झुनझुने, पक्षी के आकार की सीटी, छोटी चढ़ाई वाला बन्दर, सिर हिलाने वाला बैल आदि पशुओं की छोटी-छोटी मृण्मूर्तियाँ खिलौनों के रूप में देखी जा सकती हैं।भारत में खिलौनों की परम्परा वास्तव में गौरवशाली

रही है। इतिहास में उत्खनन से खिलौनों की प्रचुरता व प्रचंडता स्वतः ही दृष्टिगोचर होती है। ऐसी ही खिलौनों की कला परम्परा दक्षिण भारत में देखी जा सकती है। खिलौनों की यह परम्परा आंन्घ्रप्रदेश, तमिलनाडू, कर्नाटक, केरल तथा पाण्डुचेरी क्षेत्र में आज भी समृदृ रूप से प्रचलित है। खिलौनों की यह कला परम्पराओं में कोण्डापल्ली खिलौनों की एक विशिष्ट पहचान है।

आंध्रप्रदेश राज्य में विजयवाड़ा के पास कृष्णा जिले में स्थित एक छोटा-सा गाँव है जिसे कोण्डापल्ली नाम से जाना जाता है। कोण्डापल्ली गाँव में लकड़ी के खिलौने बनते हैं। ये खिलौने जिस लकड़ी से बनते हैं वह कोण्डापल्ली क्षेत्र की स्थानीय पहाड़ियों युक्त जंगल से प्राप्त की जाती हैं जिसे तोंडा पोंकी /टेल्ला पोनिकी के नाम से भी जाना जाता है। यह लकड़ी नरम तथा हल्की-सी मीठी होती है। इसे जंगल से लाने के बाद छीलकर/काट छाँटकर साफ किया जाता हैं तथा छोटे-छोटे टुकड़ो में काट दिया जाता हैं फिर इन छोटे-छोटे टुकड़ो पर आकृति को उकेरा जाता है। एक गुड़ियाँ या खिलौनें को लकड़ी के कई टुकड़ो को एक साथ जोड़कर बनाया जाता है। खिलौनें को जोड़ने के लिए गोंद/अधेसिव के साथ एक मिट्टी के लेप का भी प्रयोग किया जाता है। लेप लगाने के बाद उसे सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है जब लेप सूख जाता है तब खिलौने को चिकना किया जाता है तथा बाद में उस पर जलरंग, तेलरंग या वनस्पति रंगों के साथ तामचीन पेंट आदि खिलौनें के प्रकार के आधार पर लागू किया जाता है। कारीगर मुख्य रूप से पौराणिक/धार्मिक कथाओ, जानवरों, पक्षियों, ग्रामीण जीवन, संस्कारों, व्यवसायिक, मनोरंजन व काल्पनिक आदि विषयों पर काम करते हैं । और सबसे उल्लेखनीय दशावतारम, नृत्य गुड़ियाँ आदि हैं।

कोण्डापल्ली खिलौनों की उत्पत्ति के बारे में सटीक जानकारी की अभी कमी है। माना जाता है कि आर्य क्षत्रिय सम्प्रदाय से सम्बधित कुछ कलाकार जो काष्ठ कला में निपुण थे, उत्पीड़न के कारण मध्यप्रदेश व राजस्थान से 16 वीं शदी. के आस-पास आंध्रप्रदेश आये तथा यहाँ आकर बस गये। आमतौर पर यह माना जाता है कि खिलौनें 1363 ई॰ के बाद से कोण्डापल्ली खिलौनों के रूप में अस्तिव में हैं। कोण्डापल्ली खिलौनों को बनाने की कला लगभग 400 साल पुरानी परम्परा है। यह परम्परा विघटित होकर आये कुछ कलाकारों द्वारा

शुरू की गई थी। खिलौने बनाने वाले कारीगरों या कलाकारों को आर्यखत्रियों या नकरशालु के नाम से भी जाना जाता है। एक कथानक के अनुसार ऐसा भी माना जाता है कि एक मुक्थिशी ऋषि भगवान शिव द्वारा कला व शिल्प कौशल में प्रवीण किये गये तथा मुक्थिशी ऋषि द्वारा ही यहाँ पर कला की उत्पत्ति की गई जिसका उल्लेख ब्रह्मण्ड पुराण में है।

यह कला (खिलौनें बनाने की परम्परा) पहले एक छोटे से समूह में प्रारम्भ हुई थी बाद में यह परम्परा कॉलोनी में तब्दील हो गई जिसे बोम्बाला कॉलोनी/टॉयज कॉलोनी कहा जाने लगा था। आधुनिक समय में यह कला परम्परा पूरे गाँव में प्रचलित है और इसी कोण्डापल्ली गाँव के नाम से ही ये खिलौनें आज विश्वभर में प्रसिदृ हैं।

कोण्डापल्ली खिलौनें आंध्रप्रदेश के सांस्कृतिक प्रतीक हैं। इसे भौगोलिक संकेतन(G.I.Tag) माल पंजीकरण और संरक्षण अधिनियम 1999 के अनुसार हस्तकला केन्द्रों में से एक केन्द्र के रूप में पंजीकृत किया गया है। ये खिलौनें सबसे अधिक बिकने वाले कला उत्पादों में से एक हैं। ये खिलौने नवरात्रियों एंव संक्रान्ति के दौरान घरों में इकट्ठे किये जाते हैं। घरों की सजावट व पूजा के साथ-साथ मनोविनोद हेतु भी प्रयुक्त किये जाते हैं। युगादी महोत्सव तथा विशाखा उत्सव आदि पर इन खिलौनों का पर्यटन विकास निगम द्वारा कला प्र्रदेशन हेतु प्रयोग किया जाता है। ये खिलौने कला के अद्भुत नमूने तो हैं ही साथ ही मानसिक/मानस पटल पर सृजनात्मक क्रियाओं के लिए प्रेरक का भी काम करते हैं। खिलौनों की मदद से बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों की कल्पना शक्ति का विकास होता है और उसकी उपयोगिता सीखने पर बच्चा विभिन्न वस्तुओं को जोड़कर नई रचना करता है। नई नई ध्वनि और भाषा का प्रयोग करना सीखता है तथा खोज करना सीखता है। बच्चे खिलौनों से ही समझना सीखतेहैं। वे उन्हें खोलकर, मोड़कर, तोड़-फोड़ करके ही ठीक से उन्हें जानते हैं तथा वस्तु को समझने की कोशिश करते हैं इन सभी क्रियाओं से बालमन हर्षित तो होता ही है साथ ही उनकी कल्पना, तर्कशक्ति, जिज्ञासा, इच्छाशक्ति आदि का भी विकास होता है। खिलौनों का प्रभाव बच्चों के मन व मस्तिष्क दोनों पर पड़ता है। कोण्डापल्ली खिलौने चित्र कथाओं कहानियों तथा पौराणिक आधार पर भी बने होने के कारण

बच्चे इन खिलौनों द्वारा नई नई कथाओं , कहानियों तथा पौराणिक या धार्मिक बातों (संस्कारों) को भी सीखते हैं। क्रमिक विकास में ये खिलौने अत्यन्त ही उपयोगी/सहयोगी हैं। ये खिलौने लकड़ी के होने के कारण हानिकारक नहीं होते हैं साथ ही इन खिलौनों पर जो रंग होता है वह उसके प्रकार के या बच्चों के क्रमिक विकास के आधर पर लागू हाने के कारण हानि रहित होते हैं। ये रंग प्राकृतिक होने के साथ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छे व आकर्षक होते हैं। कला दृष्टि से भी ये खिलौने अत्यन्त ही शोभनीय, उपयोगी व महत्वपूर्ण हैं।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन:-

सम्बंधित साहित्य के फलस्वरूप निम्न पुस्तकों से इस विषय पर कार्य करने में सहायता मिली। "CHATTOPADHYAY,KAMLA DEVI'' द्वारा लिखित " ATTRIBUTE OF FOLK ART" पुस्तक से लोक कला की परिभाषा, अर्थ, अभिप्राय आदि का व्याख्यात्मक अध्ययन किया। ''DILIP K. CHAKRABARTI'' की पुस्तक "INDUS CIVILIZATION SITES IN INDIA",NEW DISCOVERIES से कला इतिहास व सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल तथा वहाँ से प्राप्त वस्तुओं तथा किन-किन स्थानों से खिलौने मिले हैं आदि के बारे में विस्तृत अध्ययन किया।

"चतुर्वेदी, मंजुला" द्वारा लिखित पुस्तक "भारतीय लोक कला के अभिप्राय" से लोक कला का वर्गीकरण- जिसमें संस्कारगत, धार्मिक, शोभनार्थ तथा मनोविनोदार्थ आदि लोक कला के क्रिया कलापों का अध्ययन किया।

"दुबे श्याम सुन्दर" द्वारा रचित पुस्तक "चित्रकला परम्परा और रचना दृष्टि" पुस्तक से भारतीय लोक कला कब और क्यों बनायी जाती है तथा परम्परागत प्रचलित रूप का अध्ययन किया। तथा "गुर्टू शचीरानी" की पुस्तक "कला दर्शन" से लोक कला के स्वरूप के विकास का अध्ययन किया। "NANDITHA KRISHANA" की पुस्तक "FOLK TOYS OF SOUTH INDIA" पुस्तक से दक्षिण भारत के लोक खिलौनों की परम्परा की जानकारी मिली तथा आंध्रप्रदेश के कोण्डापल्ली खिलौनों के बारे में भी विस्तृत अध्ययन किया।

"अग्रवाल, वासुदेवशरण" की पुस्तक "भारतीय कला" के अध्ययन से कला इतिहास व सिन्धु सभ्यता के खुदाई स्थलों से प्राप्त वस्तुऐं, खिलौनों तथा अन्य अवशेषों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा आदिकाल से वैदिक काल तक की कला और शिल्प के बारे में भी अध्ययन किया।

परिकल्पना:-

किसी भी शोध कार्य की वैधता व विश्वसनीयता के लिये स्पष्ट परिकल्पना का होना अत्यन्त ही आवश्यक है। परिकल्पना ही शोध कार्य में दिशा निर्देश का कार्य करती है। खिलौने अपनी गुणात्मक, रचनात्मक तथा कलात्मक महत्व के साथ-साथ सामाजिक परिपेक्ष्य मे सांस्कृतिक, मनौवैज्ञानिक एंव आर्थिक पक्ष मे अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है। बालमन की सहज गतिविधियों को उत्प्रेरित करने के साथ-साथ रोजगार की संम्भावनाओं पर केन्द्रित है। इसी परिकल्पना के आधार पर मैं अपना अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

उद्देश्य:-

मेरे शोध विषय का उद्देश्य कोण्डापल्ली खिलौनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। कला तत्वों का विवेचन तथा अंतर्निहित भावों, मनोभाव, अभिव्यक्ति तथा संवेगात्मक प्रभाव आदि का स्पष्टीकरण कर विवेचन करना है। रचना विधि शैलीगत तथा तकनीकी विशेषताओं से अवगत कराना है। कोण्डापल्ली के काष्ठ खिलौनों में लोक कला के समन्वय का अध्ययन कर आधुनिक युग में खिलौनों का योगदान व महत्व से अवगत कराना है।

चर:-

- कलाकार/कारीगर
- कला शिक्षक
- कला संग्रहकर्ता
- कला विद्यार्थी
- कला समीक्षक / अलोचको के विचार एवं अभिव्यक्तियाँ

कार्य प्रणाली:-

अनुसंधान अभिकल्प:-

मैनें अपने शोध का प्रारूप वर्णात्मक अनुसंधान व वस्तु-विश्लेषण विधि के आधार पर अनुसंधान अभिकल्प का चयन किया है।

प्रदत्त संकलन:-

1. प्राथमिक स्त्रोत - काष्ठ खिलौनों के छाया चित्र ।

2. द्वितीयक स्त्रोत - स्थानीय क्षेत्र व सालारजंग संग्रहालय में भ्रमण, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, इन्टरनेट वेबसाइट्स इत्यादि।

प्रतिदर्श आकार:-

लगभग 150-200 छाया चित्रों का प्रतिदर्श प्रस्तावित है जो आंध्रप्रदेश के लोक काष्ठ खिलौनों की कला परम्परा का प्रतिनिधित्व करेंगें।

प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया:-

मेरी प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया असम्भाव्य विधि पर आधारित होगी जिसमें कलाकारों/कारीगारों द्वारा बनी कलाकृतियों, चर्चाओं व विवेचनाओं पर आधारित होगी।

सीमायें:-

प्रत्येक शोध कार्य की सीमा होती है व किसी भी शोध कार्य को समय सीमा को ध्यान में रखते हुए पूर्ण करना होता है। यह शोध स्थानीय लोगों के साक्षात्कार, संग्रहालय, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, इन्टरनेट वेबसाइट्स आदि पर आधारित है।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता:-

भारत में खिलौनों की समृद्ध परम्परा है। यदि हम भारतीय इतिहास में खिलौनों की परम्परा को देखें तो यह सैंधव काल से प्राप्त होती हुई अपने विकसित रूपों में आने वाली अन्य सभ्यताओं में भी किसी न किसी

रूप में दिखाई देती रही है। इसके बावजूद यदि हम आघवधि में देखें तो यह ग्लोबल टॉय इंडस्ट्री जो कि लगभग 700000 करोड़ रू० से भी अधिक की है। उसमें भारत की भागीदारी अत्यन्त ही कम है, तथा परम्परागत रूप से निर्मित खिलौनों के प्रति समाज में जागरूकता का अभाव है। इस शोध के माध्यम से हम खिलौनों की इस कला सम्पदा को सबके समक्ष ला सकेगें, ये खिलौने अत्यन्त ही उपयोगी हैं। लोक जीवन दर्शन के साथ आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों को दृढ़ता तथा वैश्विक स्तर पर अपनी हिस्सेदारी में भी भूमिका अदा करने में उपयोगी सिद्ध होगें। ये खिलौने बालमन के मनोरंजन एंव शिक्षा प्रदान करने के साधन हैं, साथ ही युवा पीढ़ी के रोजगार के मार्ग को भी प्रशस्त करने में सहयोगी होगें।

निष्कर्ष:-

ये खिलौने हमें उत्कर्ष सीख देते हैं एंव नैतिक मूल्यों का सन्देश देने के लिऐ अध्यापन सहायक सामग्री के रूप मे भी कार्य करते हैं। गुरूदेव रविन्द्रनाथ टेगौर ने कहा है, कि-उत्तम खिलौना वह होता है जो अपूर्ण हो, खेल-खेल में बच्चा उसे पूर्ण करें। युवा पीढ़ी को खिलौनों की कला सृजनात्मकता व रचनात्मकता के मूल सिद्धान्तों का यथोचित ज्ञान प्राप्त कर वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भी क्रियाविन्त किया जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि खिलौनों से नैतिक मूल्यों का विकास, आर्थिक व सामाजिक प्रगति होगी, जिसके फलस्वरूप सुख साधनों का लाभ प्राप्त होगा। व्यक्ति आत्मनिर्भर होगा, तो मनोवैज्ञानिक सन्तोष की प्राप्ति होगी। इस कला द्धारा भावनात्मक अनुभूति प्रत्यक्ष रूप से विचारों में सुसज्जित होगी तथा कला नई दिशाओं में प्रयोगान्वित होकर प्रगति पथ पर अग्रसर होने के अवसर प्रदान करेगी।

विषय अनुक्रमणिका

भूमिका :- कोण्डापल्ली काष्ठ खिलौनों की उपयोगिता

प्रथम अध्याय 1.1 - आंध्रप्रदेश की भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

1.2 - कृष्णा जिला तथा कोण्डापल्ली गांव का परिचय व पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय 2.1 - भारतीय काष्ठ शिल्प परंपरा का उद्भव विकास व प्रसार

2.2 - कोण्डापल्ली खिलौनों का परिचय व विकास

तृतीय अध्याय 3.1 - कोण्डापल्ली खिलौनों की विषय-वस्तु वर्गीकरण तथा शैलीगत विशेषताएं

3.2 - कोण्डापल्ली खिलौनों की निर्माण प्रक्रिया व तकनीकी

चतुर्थ अध्याय 4.1 - कोण्डापल्ली खिलौनों का भावात्मक एंव संवेगात्मक प्रभाव

4.2 - कोण्डापल्ली खिलौनों को संरक्षण

पंचम अध्याय 5 - अन्य भारतीय लोक खिलौनों से तुलनात्मक अध्ययन

उपसंहार - कोण्डापल्ली खिलौनों का वर्तमान व्यवसाय तथा भावी संभावनाएं

परिशिष्ट - संदर्भ ग्रंथ सूची

- BIBLIOGRAPHY

- INTERNET WEBSITES

- चित्र सूची

अनुसंधान अभिकल्प:-

भूमिका मैं अपने शोध के प्रारंभ में कला परिचय के बारे में अध्ययन करूंगी। इसके अंतर्गत मैं कोण्डापल्ली खिलौनो की उपयोगिता व महत्व के बारे में अध्ययन करूंगी।

प्रथम अध्याय में आंध्रप्रदेश का सामान्य परिचय तथा भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अध्ययन के साथ ही कृष्णा जिला व कोण्डापल्ली गांव का एक सामान्य परिचय प्रस्तुत करूँगी।

द्वितीय अध्याय में भारतीय लोक काष्ठ शिल्प परम्परा का उद्भव विकास व प्रसार के साथ कोण्डापल्ली खिलौनों का परिचय व विकास आदि का अध्ययन करूँगी तथा इसके अन्तर्गत खिलौनों का कोण्डापल्ली से विश्वभर में पहचान बनाने तक के विकास का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

तृतीय अध्याय में कोण्डापल्ली खिलौनों की विषय वस्तु, वर्गीकरण के अन्तर्गत सामाजिक, धार्मिक, पौरांणिक, ग्रामीण जीवन , व्यवसायिक, आदिवासी, पशु-पक्षी, यातायात वाहन, मनोरंजन, नृत्य गुड़ियाँऐं आदि का अध्ययन करूँगी साथ ही निर्माण प्रक्रिया तथा तकनीकी विशेषताओं को भी प्रस्तुत करूँगी।

चतुर्थ अध्याय में कोण्डापल्ली खिलौनों का भावात्मक तथा संवेगात्मक प्रभाव तथा इन खिलौनों की संरचना प्रक्रिया का अध्ययन कर इनमें निहित भाव तथा दर्शक पर प्रभाव का भावपूर्ण पक्ष प्रस्तुत करूँगी।

पंचम अध्याय में अन्य भारतीय लोक खिलौनों का कोण्डापल्ली खिलौनों से तुलनात्मक अध्ययन करूंगी। जिसके अन्तर्गत भारत के अन्य लोक खिलौनों का भी विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

उपसंहार - इसमें मैं कोण्डापल्ली खिलौनो का वर्तमान व्यवसाय तथा भावी संभावनाओं के साथ प्रांसगिकता तथा कला क्षेत्र में योगदान का भी विवरण प्रस्तुत करूँगी।

दिनांक-

पूनम बघेल

(शोधार्थी)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

चतुवेदी, मंजुला, (2009) भारतीय लोक कला के अभिप्राय, कला प्रकाशन

दुबे, श्यामसुन्दर, (2005) लोक-चित्रकला(परम्परा और रचना दृष्टि) नेशनल पब्लिशिंग हाउस

शर्मा, सुनीता, शर्मा, अश्वनी, (2012) शेखावटी के वास्तु समृद्ध काष्ठ शिल्प, एसोसिएट पब्लिक हाउस, प्रथम स.

गुप्ता, नीलिमा, (2010) भारतीय लोक कला, (छत्तीसगढ़ संदर्भ में), स्वाति पब्लिकेशन

जोशी, ज्योतिष, (2016) आधुनिक भारतीय कला, यश पब्लिकेशन दिल्ली

अग्रवाल, रामावतार, (1972) रूप प्रद कला के मूलाधार, लायन बुक डिपो मेरठ

गुर्टू,शचीरानी, कला दर्शन, इण्डिया पब्लिशिंग हाउस

कॉलिंगवुड, आर.जी., (1972) कला के सिद्वांत, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

गोस्वामी, प्रेमचंद, (1997) भारतीय कला के विविध स्वरूप, पंचशील प्रकाशन जयपुर

चंद्रगुप्त, चंद्रगुप्त ,(1991), कला इतिहास के आयाम, उर्मिला पब्लिकेशन दिल्ली

Bibliography

Trpathi, Alok ,Gehlot, D.R. :- The history of art contemporary perspectives Dhawalikar, M.K.:- Satwahan art, sharada publishing house Delhi, 2004

Goswamy, B.N. with Agrwal, Vrinda :- Oxford reading in Indian art, 2018

Mall, Lal, Bansi :- Trees in Indian art mathelogy and folklore, 2000

Mukherji, Dave, Parul, Achar,Deeptha,Panikkar, K.Shivaji:- Toward a new art history studies in Indian art

Barry, GerldSir ,Vronowski, J. , Fisher, James , Huxley, Julian Sir :- The Art mans creative imagination, 1964

Krishna, Nanditha:- Folk toyes of south India, 2006

Mcconnell, R. B. :- Art science and human progress, 1975-78

Klingender, Fransis :- Animals in Arts and thought London, 1971

Marett, R.R. :-Phychology of folklore

Sen, Asit:- Animal motifs in ancient Indian Art Culcutta, 1972

Internet Website :-

toys impact on children-umarujala.com

M hindi.webduniya.com

www.hindinotes.org

life news- fashion trends and culture

kondapalli Toys- Wikipedia

Incredible India kondapalli.org

परिशिष्ट: चित्र सूची

चित्र सं.1 हाथीसवार (महावत) (काष्ठखिलौना)

(Source:https://www.google.com/search?q=kondapalli+toys+images&rlz=1C1ONGR_enIN991IN991&oq=kondapalli+toys+images&aqs=chrome..69i57j0i22i30l2.30905j0j15&sourceid=chrome&ie=UTF-8)

चित्र सं.2 ऑटो-रिक्शा (काष्ठ खिलौना)

(Source:https://www.google.com/search?q=kondapalli+toys+images&rlz=1C1ONGR_enIN991IN991&oq=kondapalli+toys+images&aqs=chrome..69i57j0i22i30l2.30905j0j15&sourceid=chrome&ie=UTF-8)

चित्र सं.3 मकरसंक्रांति त्यौहार (काष्ठ खिलौना)

(Source:https://www.google.com/search?q=kondapalli+toys+images&rlz=1C1ONGR_enIN991IN991&oq=kondapalli+toys+images&aqs=chrome..69i57j0i22i30l2.30905j0j15&sourceid=chrome&ie=UTF-8)

चित्र सं. 4 बैलगाड़ी (काष्ठ खिलौना)

(Source:https://www.google.com/search?q=kondapalli+toys+images&rlz=1C1ONGR_enIN991IN991&oq=kondapalli+toys+images&aqs=chrome..69i57j0i22i30l2.30905j0j15&sourceid=chrome&ie=UTF -8)